JVC
जनमुख
व्यापार चक्र
भगवान
झूलेलाल जयंती
2026

भगवान झूलेलाल जयंती की हार्दिक शुभकामनायें

JDB

Jamuna Das Biscuits

Since 1955

In House Production

Cakes & Pastries, Dessert, Namkeens, Savouries

Breads & Bun, Cookies, Biscuits, Gift Hampers

KODAI CHOWKI	SIGRA	PANDEYPUR	LANKA
9696064626	9984466407	9235537683	8810957589

With Best Wishes

footway™

PATH OF SUCCESS

CAPSICUM के नीचे
LANKA - BHU ROAD
VARANASI

मुख्य प्रतिष्ठान : विक्की ट्रेडिंग कम्पनी तेलियाबाग, वाराणसी

SSV

WHISPERS OF COMFORT

Sri Shyam Villas Banaras

सरोज सिन्हा
समाचार सम्पादक

परम्परा और पहचान को संजोये रखने का अवसर है झूलेलाल जयंती

झूलेलाल जयंती सिन्धी समाज का एक महत्वपूर्ण पर्व ही नहीं, सिन्धी समाज की संस्कृति, एकता और अस्तित्व की पहचान भी है। यह पर्व सिन्धी समुदाय के लिए केवल धार्मिक आयोजन ही नहीं बल्कि अपनी संस्कृति, परम्परा और पहचान को संजोये रखने का अवसर भी है। इस दिन को सिन्धी नववर्ष की शुरूआत के रूप में मनाया जाता है जिसे चेटीचंड कहा जाता है। मान्यता है कि भगवान झूलेलाल का जन्म उस समय हुआ जब सिन्ध प्रदेश में लोगों पर अत्याचार हो रहे थे और उन्हें अपने धर्म और आस्था की रक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ा था। यूं कहे तो झूलेलाल जयंती सिर्फ सिन्धी समाज तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पूरे समाज को एकता एवं सद्भाव के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देता है। झूलेलाल को सिंध के लोग वरूण देव का अवतार मानते हैं। वे सिंध क्षेत्र में अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध सत्य, प्रेम और धार्मिक स्वतंत्रता के प्रतीक माने जाते हैं। कहा जाता है कि 10वीं सदी में जब सिंध के हिन्दू समाज पर एक कट्टर शासक मिर्कशाह द्वारा जबरन धर्म परिवर्तन का दबाव बढ़ा, तब समाज ने भगवान से प्रार्थना की। उन्हीं की कृपा से झूलेलाल का जन्म हुआ, जिन्होंने अपने चमत्कारी प्रभाव से मिर्कशाह को न्याय और सह-अस्तित्व का महत्व समझाया। हालांकि आज के दौर में जब समाज में कट्टरता और असहिष्णुता जैसी चुनौतियां बढ़ रही हैं, तब भगवान झूलेलाल का संदेश पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। वे हमें प्रेम, सौहार्द और सहिष्णुता का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देते हैं। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सत्य और न्याय की राह पर चलने वाले लोग न केवल कठिनाइयों को पार कर सकते हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन भी ला सकते हैं। भगवान झूलेलाल जयंती केवल धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि यह सिन्धी समाज की आत्मशक्ति और संघर्षशीलता का भी प्रतीक है। यह पर्व हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने, एकता बनाए रखने और प्रेम तथा सहिष्णुता के मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा देते हैं। इस शुभ अवसर पर हम सभी को भगवान झूलेलाल के आदर्शों को अपनाने और उन्हें अपने जीवन में उतारने का संकल्प लेना चाहिए।

भगवान झूलेलाज जयंती पर सभी को लख-लख बधाई।

सरोज सिन्हा

जनमुख परामर्श मंडल

एस. कुमार, अध्यक्ष
सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया

संतोष अग्रवाल,
सभापति
श्री काशी अग्रवाल समाज

श्रीनारायण खेमका
अध्यक्ष
अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन

वी.के.जैन, अध्यक्ष
जैन मिलन, वाराणसी

डा. नीलम ओहरी
स्त्री रोग विशेषज्ञ

डा. एस.के.पाठक
वरिष्ठ चिकित्सक

प्रधान सम्पादक
ब्रजेश कुमार राय 'शर्मा'
समाचार सम्पादक
सरोज सिन्हा
फोन : 0542-2500324 9336929544
Email : janmukh.vns@gmail.com
जनमुख हिन्दी दैनिक के लिए निःशुल्क प्रकाशित

शुभकामनाएं

काशीवासियों को भगवान श्री झूलेलाल की जयंती के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रहलाद कुमार
जमुना बेकर्स

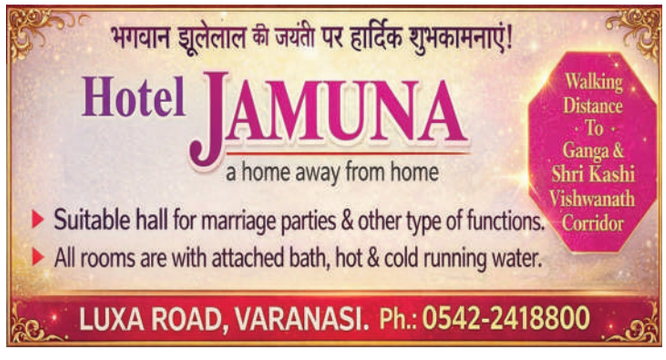

अमृतपुत्र-संत श्री चाँइराम अब नहीं रहे?

लीला राम सचदेवा
प्रदेश प्रभारी- भारतीय

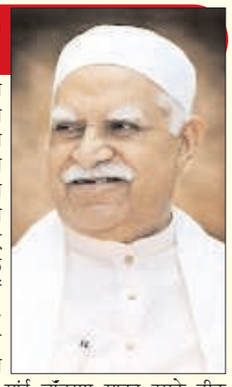

उखड़ गया वो बरगद, जिनकी छाया में हम जीते थे कहां से लाये वो दिन फिर से, जब साथ-साथ जीते थे।

सिन्धु देश में अनेक संत-महात्मा उत्पन्न हुए जिन्होंने न केवल सिन्ध भूमि को अपने प्रकाश से अलोकित किया अपितु विश्व को अपनी ज्योति सुधा से विभोर किया। ऐसा ही सक्खर जिला के रोहड़ी स्थान पर ब्रह्मज्ञानी महापुरूष सांई खोताराम द्वारा स्थापित 'रहडकी' दरबार का सिन्ध में बहुत मान-सम्मान था, सामान्य गरीब वर्ग भी जुड़ा हुआ रहा। सिन्ध के प्रसिद्ध ज्ञानी व भगत सिरोमणी संत सतराम दास, मानवतनधारी देवदूत भगत कंवर राम साहब, संत बाबा हरदास राम (गोदड़ीवाले) एवं गोभक्त संत आसूदा राम साहब आदि अनेक संत ''रहड़की' दरबार की देन है। इसी संत परम्परा की शृंखला में लखनऊ स्थित शिवशाँति आश्रम के पीठाधीश्वर संत श्री सांई चाँइराम साहब भी आते है। मैं स्थापना काल से आश्रम की हर गतिविधियों को सुनता व देखता रहा। सिन्धी कौम के संस्कार के कारण मैं सदैव ही संत-महापुरूषों वीरो एवं बुजुर्गों को आदर देता हूँ। लेकिन लगाव महसूस नहीं किया। आशा है मेरी मुंहफट बात के लिए क्षमा करेंगे मैंने देखा साधन सम्पन्न पैसे वाले लोग अपने स्वार्थ वशीभूत गणेश परिक्रमा करते लच्छेदार बात करने वालों का हुजूम इन महापुरूषों को घेरे रहता है। जिस कारण समाज में क्रांन्तिकारी चिन्तन का अभाव रहता है, सही रूप से रचनात्मक व कल्याणकारी कार्य हो नहीं पाते, सामान्य व निर्धन वर्ग दूर ही खड़ा रहता इसलिए चाह रहते हुए भी सम्यक दूरी बनी रहती है। मैं अपने निजी कार्यो से अनेक नगरों में जाता रहा तो क्या देखता हूँ सामान्य गरीब वर्ग में भी आश्रम की कल्याणकारी कार्यो की चर्चा व सम्मान के साथ होने लगी। विख्यात संत-महात्मा-महापुरूष- राजनेता आदि भी आश्रम के विशेष कार्यक्रमों में आने लगे। रा.स्व.संघ तीन मूर्धन्य व्यक्तित्व सर्वश्री सुन्दरदास खत्री (लखनऊ), सुन्दरदास राजपाल (फैजाबाद), सुन्दरदास (सीतापुर) सर्वश्री परमानन्द पंजवानी देवी दास आर्य (कानपुर) धर्मपाल उर्फ राजा भइया (विधायक) बहराइच आदि मान्यवर अटल बिहारी बाजपेई- लालकृष्ण आडवानी से अधिक निकटता रहा। मुझे भी इन लोगों का स्नेह-प्यार सदैव मिला उन सबको के बीच भी आश्रम व संतश्री की प्रशंसा सुनता रहा। संत श्री की मेधा-स्मरण शक्ति की दाद देनी पड़ेगी उनके अनुकरणीय आचरण की सुगन्ध समाज में तेजी से फैलने लगी। आश्रम द्वारा निर्धन- बेसहारा- अपाहिज-रोगग्रस्त- बुजुर्गो- विधवा- बेरोजगार आदि की मदद के साथ अन्नदान की सेवा एंव सामूहिक विवाह- जनेऊ संस्कार को जमीनी धरातल पर होते देखा। मैंने देखा भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग वैदिक सिन्धु सभ्यता- भाषा- साहित्य- परम्परागत लोक संगीत-भगत आदि का प्रचार व संवर्धन एवं राष्ट्रीय आपदा पर दिल खोलकर दान, विद्वानों- संत महात्मा- सूफियो समर्पित जीवन दानी लोगों को सदैव सम्मान करते हुए देखा। वे ऐसे गृहस्थ संत है जो संसार में रहते हुए सद्गुणों की खान है। जबकि अधिकांश बड़े नाम के संबंध में यह बात लागू होती है कि -ज्यो-ज्यो उनके बारे में जानकारी बढ़ती जाती है, उनके प्रति सम्मान घटता जाता है, परन्तु सांई चाँइराम साहब इसके ठीक विपरीत है, ज्यो-ज्यो मैं उन्हें अधिक जानने लगा, मेरा उनके प्रति सम्मान बढ़ता गया। फिर क्या था कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विशन कुमार रूपानी के साथ हर कार्यक्रम में जाने लगा। किसी प्रकार की संकीर्णता व दिखावे का मुखौटा नहीं, मानव सेवा के प्रति गहरी आबद्धता और सतही धरातल को जोड़कर हल करने का अनोखा सरल प्रयास करते हुए देखा। वे संत परम्परा के ऐसे सिपाही है उनके समाज कल्याण के प्रति गहरा चिन्तन के बीज थे। स्वदेशी- सादगी भरा व्यवहार-सदा अपने को दास कहना और पुरानी रूढ़ियो से मुक्त होकर समय सापेक्ष कुछ नया समाधान खोजने की छटपटाहट है। ऐसे गरिमा से भरे व्यक्तित्व कम ही देखे जाते तभी तो आश्रम में संस्कारित सेवकों की फौज है अमीर- मध्य गरीब वर्ग छोटे-छोटे कार्य में लगने को आतुर है, निःशुल्क समर्पित सेवक है। जो भी एकबार मिलता वह उनके अनुकरणीय व्यवहार का कायल हो जाता। इसलिए हर कोई यही कहता है-मुझे बहुत मानते है। लखनऊ स्थित शिवशाँन्ति आश्रम को केन्द्र मानकर राष्ट्रीय स्तर पर भगत कंवर राम ट्रस्ट द्वारा अनेक सामाजिक कार्य करते हुए अपने मधुर-मुस्कान युक्त सम्बोधन में 'गुरूवाणी' पर सबको मुग्ध कर देते। सिन्ध (पाक) के व शहरो व 54 भारत के शहरों में आश्रम द्वारा हर प्रकार के सेवाकार्य-सामाजिक सद्भाव का आज भी कार्य हो रहा है।

ऐसे यशस्वी सांई चाँइराम साहब अपने 78वर्ष की आयु में 15 अक्टूबर 2025 को शरीर हम सबको छोड़कर चले गये। मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री, हिन्दू- सिख समाज के वरिष्ठ नेता- लाखों का जनसमुदाय रोते हुए विदाई दी। ''मरकर जाते कभी नहीं वो, जो रहते हैं याद सदा।

याद ही दर्शन देते, जब हम करते है यदा-कदा।।''

आज अगर सिन्ध प्रान्त भारत में रहता तो ऐसे यशस्वी को राष्ट्रीय पद्म अवार्ड से नवाजा जाता। खैर- मरणोपरान्त भी उत्तर प्रदेश सरकार की संतुष्टि पर राष्ट्रीय स्तर पर 'अवार्ड' से नवाजा जाये। शत्-शत् प्रणाम- नमन् -श्रद्धांजलि- सदा याद आयेंगे।

(सेवा परमोधर्म)

सेवा व परोपकार का क्षेत्र व्यापक है। जैसे विद्वान पुरूष विद्या द्वारा अशिक्षित मनुष्यों को शिक्षित करता है एवं हृष्ट-पुष्ट पुरूष शारीरिक शक्ति द्वारा दलितों- गरीबो व निर्बल व्यक्तियों पर होने वाले अत्याचार के विरूद्ध खड़े होकर उनकी रक्षा करे या धनी पुरूष अपने धन द्वारा अस्पताल- धर्मशाला व गरीबों को अन्न वस्त्र आदि की सहायता, निर्धन बच्चों के विद्या कार्य में उनकी सहायता या रोगियों को औषधी आदि देना परोपकार का कार्य है। अन्धे, विकलांग या रोगग्रस्त को रास्ता दिखाना, प्यासे को पानी पिलाना, चोटिल या बीमार को अस्पताल पहुंचाना आदि अनेक कार्य है। मन्दिरों पर नित्य जाना वहाँ भी साफ-सफाई, पूजा-अर्चना प्रसाद आदि का भागीदार बनना। आम भण्डारे में पंगत में बैठाकर प्रसाद व पानी चलाना, स्वयं भण्डारे में सेवा कर ही प्रसाद लेना इसमें न किसी साधन की जरूरत है न हीं प्रयास की जरूरत है। बस मन-तन सेवाव्रती भाव का हो।

परहित सरित धर्म नहीं भाई।

जय झूलेलाल।

-पं. अनिल शर्मा, मुख्य पुजारी
झूले लाल मन्दिर लक्सा

बधाई

पूज्य श्री भगवान झूलेलाल जी की जन्म दिवस पावन के अवसर पर सभी को लख-लख बधाई।

विजय मुलानी
विशाल बेकर्स

शुभकामनाएं

नव वर्ष और भगवान झूलेलाल जयंती के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

संजय चाँगरानी

With Best Wishes...

गृहशोभा

WALLPAPER | MATTRESS | BLINDS | CURTAIN | SOFA FABRICS
MATS | CARPETS | BLANKETS | CUSHIONS | TOWELS

Rathyatra Cell : 7843817292
Bhelupur Cell : 7071244383
E-Mail: grihshobhafurnishings@gmail.com

ब्रम्हस्वरूप सन्त सांई आसूदाराम साहिब

सतीश छाबड़ा
अध्यक्ष, भारतीय सिन्धु सभा, वाराणसी।

एक बार सिन्ध के प्रसिद्ध संत शिरोमणी कंवर राम साहब, अपने दरबार रहड़िकी के गोशाला मं अचानक पहुंचे तो क्या देखते है, उनके गुरूभाई आसूदा राम जमीन में नंगे बदन लोटपोट कर करवट बदल रहे है। पूछने पर जानकारी मिली- गायों के बैठने के स्थान को अच्छी तरह देख रहे है। कि नम हो गया है कि नहीं? कहीं कंकर पत्थर तो नहीं पड़ा है, जो गायों को चुभ जाय। अपने से पूर्णरूप से संतुष्ट हो जाने पर 'गोशाला' में गायों को बांधते थे, यह थी गोमक्तरूपी सेवा। आसूदा राम सदैव भोलेशंकर जैसे शाँन्त-गम्भीर व ध्यानमग्न रहा करते थे, इसलिए संत शिरोमणी कंवर राम ने उन्हें शिवजी की उपाधि दी थी, इस इतिहास को ध्यान में रहते हुए उनके योग्य यशस्वी पुत्र सांई चाँडूराम साहब ने उ.प्र. लखनऊ स्थित आश्रम की स्थापना के समय आश्रम का नाम ''शिव शाँन्ति आश्रम'' रखा।

हमारे अराध्य झूलेलाल

नीतिन शेवारामानी

चैत्र शुक्ल द्वितीय संवत 1117 को सिन्ध प्रान्त अब (पाकिस्तान) के एक गाँव में एक बालक ने जन्म लिया वही आगे चलकर उदयराज (उदेरो लाल) भगवान वरूण देव बने उसे सिन्धी समाज अवतारी पुरुष वरूणदेव मानकर पूजा अर्चना करता है। उस समय सिन्ध प्रान्त में मुगल शासक मकबर खां राज्य करता था। वह भयंकर अत्याचारी व क्रूर राजा था। वह हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार करता था। उससे मुक्ति पाने के लिए हिन्दुओं ने सूर्योदय के पूर्व सिन्धु सागर के तट पर एकत्रित होकर वरूण देवता की तीन दिनों तक पूजा अर्चना की तीसरे दिन जल से प्रकाश पुंज ने भविष्यवाणी की कि मैं शीघ्र अवतार लेकर आपके दुःख को दूर करूंगा। कुछ दिन बाद चमत्कारी बालक का जन्म हुआ देखते ही देखते वह बालक किशोर, तरूण, प्रौढ़ बनकर पुनः शिशु बनकर पालने में झूलने लगा। मकबर खां को जब यह मालूम हुआ तो अपने सैनिकों को उस बालक को लेने भेजा। सैनिक बालक के चमत्कारों को देखकर घबरा गये। उन्होंने बालक के पिता को आदेश दिया कि बालक के बड़े होने पर उसे बादशाह के पास लाये। सैनिक जैसे ही वहां से गये। उन्हें लगा कि बालक सिन्धु सागर से निकलकर सेना सहित उनके पीछे आ रहा है। जब वह मकबर खां के दरबार में आया तो उसे ज्ञात हुआ कि वही बालक कल रात शाही महल में आया था और काफी चमत्कारी रूप दिखाया। मकबर खां भयंकर डर गया और उसने प्रतिज्ञा की अब मैं हिन्दुओं पर अत्याचार का रास्ता छोड़कर सबको समान रूप से मानूंगा। इसे हिन्दुओं ने अपनी विजय मानी। हिन्दू समाज में बड़े ही हर्ष व त्यौहार का माहौल हो गया। वे उस बालक का नाम (उदेरी लाल) उदय राज रखा गया। बड़ी संख्या में लोग उसके अनुयायी व उपदेशक बन गये। उसी समय से उनकी अवतारी पुरुष वरूण देव (भगवान झूलेलाल) नाम से पूजा अर्चना की जाती आ रही है। वैसे वरूण देव की पूजा तो अनादि अनन्त काल से हिन्दू समाज करता आ रहा है। जो भी भक्त विधि-विधान एवं श्रद्धा से पूजा-अर्चना भगवान सांई झूलेलाल की करता है उसके सब कष्ट दूर हो जाते हैं। तो आइये इस पर्व को हम सब सिंधी भाई-बहन पूरे हर्ष एवं उल्लास से मनाएं।

झूलेलाल जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं
VICKY SHOE CO.
WOODLAND VALENTINO LIBERTY NIKE Reebok
Lahurabir, Varanasi-221002
Phone : 2411363 (O) 3297808 Cell:9336467784

उल्लासनगर सिन्धी एसोसिएशन

संकलनकर्ता
प्रेम माखिला पप्पू
मुखिया-बड़ी गैबी सिन्धी पंचायत

मैंने सुना है कि एक प्रतियोगिता हुई कि दुनियाँ में सबसे ज्यादा कारीगरी कही होती है- तो एक तार अमेरिका में बना उतना बारीक तार कोई न बना सके। खाली आख से दिखाई न दे। बाल से भी पतला जब तक विशेष यंत्रों से न देखो, दिखाई न पड़े। उस तार को लोग लेकर जर्मन गये। जर्मन के कारीगरों ने उसमें एक छेद कर दिया। दंग रह गये सब। हद कर दी तार में छेद कर दिया। फिर वे जापान गये जपानियों ने उसतार में बाईबिल का वचन लिख दिया। हैरान हो गये। अब उन्होंने कहा इसके आगे कौन कारीगरी कर सकेगा। मगर लोगों ने कहा भारत के उल्लासनगर जाओ, अभी एक जगह बाकी है। पता लगाकर उल्लासनगर आये। उल्लासनगर के एक सिन्धी कारीगर ने उसमें यू.एस.ए./बड़ी कारीगरी से लिखा, लेकिन पूछा रहते हो हिन्दुस्तान में, मेड इन यू.एस.एस. क्यो लिखते हो। उन्होंने कहा यू.एस.ए. तुम्हारे बाप का है सिन्धियों का है। मेड इन उल्लासनगर सिन्धी एसोसियसन यानि यू.एस.ए.। वे हिन्दुस्तान को मानते है, वे तो बहुत आगे निकल चुके है, बनती उल्लासनगर में है।

आचार्य रजनीश की पुस्तक से साभार

शुभकामनाएं

नव वर्ष और भगवान झूलेलाल जयंती के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

लखन खेमानी
विक्की शू

लख-लख बधाई

जय झूलेलाल की जयंती पर लख-लख बधाई। सभी के जीवन में खुशहाली और समृद्धि आये। जय झूलेलाल।

मनोज शेवारामानी
रंगवर्षा साड़ी

शुभकामनाएं

काशीवासियों को भगवान श्री झूलेलाल की जयंती के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

भरत खानचंदानी

पूज्य सिन्धी सेन्ट्रल पंचायत एवं पूज्य पंचायत शिव शक्ति की तरफ से समस्त काशीवासियों को भगवान झूलेलाल जयंती की लख-लख बधाईयां।

समस्त धर्मो का सार मानव सेवा है।
मानव में ही ईश्वर विद्यमान है।
सदैव मानव सेवा करते रहिये।

हासानन्द बदलानी
मुखिया- पूज्य पंचायत शिवशक्ति
प्लाट नं.23 मौलवी बाग वाराणसी
मो.9838005008

With Best Wishes
THE SHOE SHOPPE
Exclusive Store

ADDA
Let's walk together
Rathyatra Road, Varanasi (U.P.) Ph. : 8795477178

युवा आगे नहीं आया तो पीछे चला जायेगा समाज- एस.कुमार

एस. कुमार
राष्ट्रीय अध्यक्ष
सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया

सिन्धी काउंसिल ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष एस कुमार का मानना है कि युवाओं को सामाजिक कार्यो से जोड़ना होगा। क्योंकि हमारा युवा आगे नहीं आया तो समाज काफी पीछे चला जायेगा। या यूं कहें कि समाज नहीं जुड़ेगा तो सिन्धी समाज खत्म हो जायेगा। हमारे युवाओं को हमारी संस्कृति सभ्यता, संर्घष और आदर्शो के बारे में जानकारी देनी होगी। आज की न्यू जनरेशन हमारे समाज के बुजुर्गों के संघर्षों से अनभिज्ञ है। उसका संस्कृति से कोई जुड़ाव नहीं है। इसलिए हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम युवाओं को अपनी संस्कृति से जोड़ें। सिन्धी समाज के युवा आज हर क्षेत्र में आगे आ रहे हैं, कोई भी क्षेत्र उनसे अछूता नहीं है। क्योंकि हमारे समाज में टैलेंट की कोई कमी नहीं है। बस उन्हें आगे बढ़ाना है। सिन्धी समाज की सबसे बड़ी संस्था आक्सा ने भी युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठायें है। हाल ही में आक्सा के यूथ ब्रिगेड इंडिया का अध्यक्ष संदीप सुखवानी को बनाया गया है। जो सक्रिय युवाओं की टीम तैयार कर रहे हैं। सिन्धी काउंसिल के कार्यो के बारे में पूछे जाने पर एस.कुमार ने बताया कि फरवरी में संस्था की एजीएम हुई थी। जिसमें दो महत्वपूर्ण अप्वाइंमेंट किये गये हैं। विजय असरानी को जहां दिल्ली का अध्यक्ष बनाया गया है वहीं विनोद कुमार को हरियाणा की जिम्मेदारी दी गयी है। हरियाणा में सिन्धी काउंसिल ऑफ इंडिया की कोई शाखा पहले नहीं थी। हरियाणा के लोग हमारे साथ पहली बार जुड़े हैं। जो सबसे अच्छी बात है। एस.कुमार ने बताया कि पिछले वर्ष अप्रैल में बनारस में सिन्धी काउंसिल इंडिया की एक्जक्यूटिव बाडी की मीटिंग में वेलफेयर फंड से कमजोर तबके की मदद का जो फैसला किया गया था उसके तहत भी देशभर में लोगों को आर्थिक मदद की जा रही है। एस.कुमार ने बताया कि समाज के छात्रों की मदद के लिए इस वर्ष तीन स्कालरशिप दी जा रही है। पिछले वर्ष दो बच्चों को शिक्षा के लिए स्कालरशिप दी गयी थी। हमारी हमेशा कोशिश रही है कि समाज के बच्चों को शिक्षा में किसी भी तरह की आर्थिक परेशानी का सामना न करना पड़े।

विख्यात मोटण भगत

सिन्धी समाज के बीच मोटण सिन्धी भगत का बड़ा नाम था। वे अक्सर दिल्ली के सांई गोपाल दास आश्रम में लगे मेलो- उत्सव में आते थे। रहते थे रोहतक अधिकतर दादी गंगा जगिताणी के घर में ही आकर रहते थे। दादी गंगा भूतपूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवानी की सास थी। एक बार मोटण भगत बाथरूम में स्नान कर करूआतेल लगाकर चिल्लाने लगे बाहर निकलकर शरीर जलने लगा आखिर ऐसा क्यो हुआ पता लगा तेल की जगह डिटॉल की शीशी उड़ेल कर शरीर की मालिश कर दी। तेल- डिटॉल की शीशी का कलर एक समान- होता है। बाद में ठीक होने पर दादी गंगा व जो भी सुने हँसने लगे।

संकलनकर्ता- दीवान चन्द बलेचा
सेवा प्रमुख- शिव शक्ति पंचायत, वाराणसी।

भगवान झूलेलाल जयंती के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

साड़ीघर

दशाश्वमेध
0542-2401131
+91-7985177209

अर्दली बाजार
0542-2500131
+91-9260967679

व्यापार में डिजीटल टेक्नोलॉजी तेजी से अपनाएं- सी.ए. जय प्रद्धवानी

निःसहाय, दीनहीन लोगों के मददगार, उच्च विचार, कुशल व्यवहार व समाजसेवी तथा सिंधु विकास समिति के पूर्व अध्यक्ष जय प्रद्धवानी समाजसेवा के प्रति हमेशा समर्पित रहते हैं। साथ ही युवाओं को शिक्षा के प्रति जागरुक करने के साथ-साथ उनके लिए प्रेरणा स्रोत भी हैं। पूर्वांचल के पहले सिंधी सी.ए. जय प्रद्धानी विगत 32 वर्षो से इनकम टैक्स, जीएसटी व वित्तीय इन्वेस्टमेंट, एडवाइजर, ने विभिन्न सामाजिक व व्यवसायिक मुद्दों पर जनमुख प्रतिनिधि से खुलकर बातचीत की। प्रस्तुत है सिंधी समाज में शिक्षा की अलख जगाने वाले सी.ए. जय प्रद्धवानी से 'जनमुख' की बातचीत।

प्रश्न- वर्तमान में हिन्दुस्तान अथवा वाराणसी में व्यापारिक स्थितियां कैसी दिख रही हैं?

उत्तर- आज के युग में ऑनलाइन बिजनेस, तेजी के साथ फल-फूल रहा है। बनारस के व्यापारियों को चाहिये कि वो अपनी व्यवसाय में डिजीटल टेक्नोलॉजी को ले आये एवं दुकानदारी के साथ-साथ ऑनलाइन व्यवसाय में भी अपना व्यापार करें। आने वाले समय में यह ऑनलाइन व्यापार और तेजी के साथ बढ़ने वाला है। इसलिए जो व्यापारी जितना जल्दी ऑनलाइन टेक्नोलॉजी को अपनायेंगे भविष्य में उनको तेजी के साथ तरक्की दिखेगी।

डिजीटल लेन-देन भी अब रिटेल बिजनेस औसतः 4-5 प्रतिशत हो गयी है। एवं होलसेल व्यापार में तो लगभग पूरी लेनदेन डिजिटल माध्यम से होने लगी है।

प्रश्न- सिन्धी समाज के नेतृत्वकर्ताओं को अपनी भूमिकाएं कैसी निभानी चाहिये?

उत्तर- सिन्धी समाज मूलतः व्यापारिक समाज है। अगर व्यापार बढ़ेगा तो आमदनी भी होगी। व्यापार बढ़ाने के लिए तौर-तरीकों के लिए बिजनेस सेमिनार व व्यापारिक गोष्ठियों का आयोजन होना चाहिये। वंचित व गरीब परिवार के उत्थान के लिये उनके पास सरकारी स्कीमों का पूरा फायदा पहुंचे इसके लिए घर-घर में जागरूकता पैदा करनी होगी। समाज के स्टूडेंट्स बेहतर व उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। इसके लिए उनको स्कॉलरशिप व सही मार्गदर्शन प्राप्त हों। इसके लिए शिक्षा से जुड़ी संस्थाओं एवं स्वयंसेवी समितियों से स्टूडेंट्स को मिलाने का कार्य भी करना होगा।

प्रश्न- सिन्धी महिलाओं का आज के युग में क्या रोल होना चाहिये?

उत्तर- सिन्धी माताओं एवं बहनों को अपने व परिवार की सेहत का ख्याल रखते हुए बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिये अपना कीमती समय देना जरूरी है। आज के युग में सिन्धी बहने एवं बेटियां नौकरी भी करने लगी है एवं अपने परिवार के व्यवसाय में हाथ बांटने लगी है। यह एक अच्छा संकेत है क्योंकि महिलाओं को चहारदीवारी से बाहर निकलकर व्यवसाय में भी हाथ बंटाना चाहिये।

प्रश्न- बच्चों एवं युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

उत्तर- आने वाले समय में अब ज्यादातर युवा अपने पारिवारिक व्यवसाय में न जाकर बड़े शहरों मल्टी नेशनल कम्पनियों में झूलेलाल नौकरी करते हुए आपको मिलेंगे। इस समय समाज की जो स्थिति है वह यह दिखा रही है कि युवा अब छोटे शहरों में रहना पसन्द नहीं कर रहे हैं बल्कि, बड़े शहरों में बेहतर जीवन-शैली जीने की चाहत रखते हैं। जरूरी है कि सिन्धी समाज के बच्चे पढ़ाई में पूरा ध्यान रखें ताकि वो आने वाले समय में सी.ए, इंजीनियर, डाक्टर व आई.ए.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण कर सकें तभी उनको बड़ी कम्पनियों में अच्छी नौकरी मिल पायेगी।

भगवान झूलेलाल की जयंती
पर हार्दिक शुभकामनाएं

Jai Pradhwani & Co.

Chartered Accountants

Flat No. No.48, Block-2, Rajshree Ashiyana Apartments
Sidhgiri bagh, Varanasi
Mob.: 9415343292, 9336910656
E-Mail: cajaipradhwani@gmail.com

इंडिया और हिन्दू शब्द दोनो सिन्धु शब्द से पैदा हुए

संकलनकर्ता
वासुदेव बालचन्दानी

योगेश्वर कृष्ण ने हिन्दू शब्द भी नही सुना था। कभी सोचा भी न होगा कि यह शब्द भी कभी इस जाति की खोपड़ी में लिखा जायेगा। ये जो लिख गये वे दूसरे थे। यह हिन्दुओ का अपना शब्द भी नही है। सब उधारी है, शब्द भी उधार है। पहली दफा जो लोग इस देश में हूण-ईरानी बर्बर आये उनकी भाषा में 'स' की जगह 'ह' का उच्चारण होता है। तो सिन्धु नदी को हिन्दु नदी कहते थे, और आसपास रहने वालों को हिन्दू कहकर पुकारते थे। फिर ग्रीक भारत आए, यूनानी तो भाषा में फर्क हो गया। वे हिन्दू को सिंधस कहते थे जो हिन्दस हो गया। यूनान तक पहुंचते-पहुँचते सिकन्दर के साथ शब्द इन्दस हो गया और 'इंडस से इंडिया 2'।

आचार्य रजनीश की किताब से साभार

धर्म एवं जाति

संगीता बडानी
सिंधी समाज

जय झूले लाल

धर्म एवं जाति से इस समय नई युवा पीढ़ी आगे बढ़ गयी है, जिससे धर्म, जाति खत्म हो जायेगी। आइए हम सब मिल कर इसे बचाएं। युवा वर्ग किसी दूसरी जाति में शादियाँ कर रहे हैं इससे सब जाति खत्म हो जाएगी। अपनी संस्कृति, जाति, भाषा को बचाने के लिए हम लोगो को मिलकर कदम उठाना होगा। अपनी धरोहर को बचाना होगा। माता-पिता को अपने बच्चों में जातिवाद सिखाना चाहिए नहीं तो आगे चलकर सब जातियाँ लुप्त हो जायेगी। इसमें हम बड़ों को कदम उठाना चाहिए। जो बच्चे अपनी भाषा नहीं बोल पा रहे हैं। घर-घर में अपनी भाषा, जाति, बोली रीति रिवाज हम सब का कर्तव्य है कि हम अपने बच्चों को यह सिखाएं। अपने धर्म और जाति को बचाने के लिए हम लोगों के बुजुर्गों ने अपने घर द्वार और कारोबार छोड़कर यहां आयें।

HAPPY JHULELAL JAYANTI
Fashion Fever
A CHOICE OF TODAY'S GENERATION
T-Shirt, Pant, Short Shirt, Lower, Half Pant
Kids Wear, Complete Family Shop
GODOWLIA-JANGAMBARI ROAD VARANASI

भगवान झूलेलाल जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं
जीवन स्टोर्स
नाइटी, नाइट सूट, शॉल, स्टॉल एवं कार्डिगन इत्यादि।
(मारवाड़ी अस्पताल बिल्डिंग के नीचे, गांधी आश्रम के बगल में) दशाश्वमेध रोड, वाराणसी। मो.नं.-9696763507

सिंधी समाज की आस्था और संस्कृति के प्रतीक भगवान झूलेलाल का संदेश केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानवता, भाईचारे और सद्भाव का भी प्रतीक है। आज के दौर में जब समाज कई तरह की चुनौतियों और मतभेदों से गुजर रहा है, तब भगवान झूलेलाल का यह संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है कि सभी धर्मों और समुदायों के लोग आपसी सम्मान और प्रेम के साथ रहें। इसी विषय पर आज हम परिचर्चा कर रहे हैं – 'भगवान झूलेलाल के संदेश का आज के समय में क्या महत्व है?' और यह समझने का प्रयास करेंगे कि उनके आदर्श और शिक्षाएं वर्तमान समाज को किस तरह एकता, शांति और सह-अस्तित्व का मार्ग दिखा सकती हैं।

भगवान झूलेलाल का संदेश की वर्तमान में प्रासंगिकता

युवाओं की सामाजिक भागीदारी ज्यादा से ज्यादा बढ़े

नानकचंद बाघवानी
पूर्व अध्यक्ष
सिंधी सेंट्रल पंचायत

सिंधी समाज की आस्था, संस्कृति और पहचान में भगवान झूलेलाल का विशेष स्थान है। उन्हें जल देवता और समाज के रक्षक के रूप में पूजा जाता है। हर वर्ष चेटीचंड के पावन अवसर पर झूलेलाल जयंती बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाई जाती है। यह केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि सिंधी समाज की एकता, संस्कृति और परंपराओं का प्रतीक भी है। भगवान झूलेलाल का जीवन मानवता, भाईचारे और सहिष्णुता का संदेश देता है। माना जाता है कि उन्होंने समाज को यह सिखाया कि सभी धर्म और समुदाय आपसी प्रेम और सम्मान के साथ रह सकते हैं। उनका संदेश है कि ईश्वर एक है और सभी मनुष्य उसकी संतान हैं। इसलिए समाज में शांति, सद्भाव और सहयोग की भावना बनी रहनी चाहिए। इतिहास में कई उतार-चढ़ाव के बावजूद सिंधी समाज ने अपनी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखा है। विशेष रूप से विभाजन के बाद जब सिंधी समाज को नए स्थानों पर बसना पड़ा, तब भी उन्होंने अपने त्योहार, भाषा और धार्मिक आस्थाओं को नहीं छोड़ा। इस संघर्ष के समय भगवान झूलेलाल की आस्था ने समाज को मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाए रखा। झूलेलाल जयंती का पर्व समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने और नई पीढ़ी को संस्कृति से परिचित कराने का भी अवसर देता है। आज के समय में झूलेलाल का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। जब दुनिया कई प्रकार की सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रही है, तब भाईचारा, सहिष्णुता और एकता का संदेश समाज को सही दिशा दिखा सकता है। सिंधी समाज की नई पीढ़ी के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी संस्कृति और परंपराओं को समझें और आगे बढ़ाएं। इसलिए जरूरी है कि युवा वर्ग की सामाजिक भागीदारी ज्यादा से ज्यादा बढ़े।

भगवान झूलेलाल की प्रेरणा से तेजी से आगे बढ़ा सिंधी समाज

गोविन्द कृष्णानी

आज देश में कोई भी व्यक्ति सिंधी समाज को बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखता है और कहता है कि आप लोग ने बहुत ही जल्दी मेहनत करके बहुत ही ऊंचाइयों तक पहुंचे हैं। लोगों का यह कहना बताता है कि संघर्ष के रास्तों पर चलते भी हम एक अहम मुकाम हासिल करने में सफल रहे हैं। और यह संभव हुआ भगवान झूलेलाल की प्रेरणा से, उनके आदर्शों से। भगवान झूलेलाल सिंधी समाज की आस्था, संस्कृति और पहचान के प्रतीक माने जाते हैं। सिंधी समाज उन्हें केवल एक धार्मिक देवता के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम, सद्भाव और एकता के संदेशवाहक के रूप में भी देखता है। झूलेलाल जयंती समाज की एकजुटता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बन जाती है। झूलेलाल का सबसे बड़ा संदेश है – समानता, भाईचारा और मानवता। माना जाता है कि उन्होंने लोगों को यह सिखाया कि सभी धर्मों और समुदायों का सम्मान करना चाहिए और समाज में शांति तथा सद्भाव बनाए रखना चाहिए। सिंधी समाज ने इतिहास में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, विशेषकर विभाजन के समय जब उन्हें अपने मूल स्थान से विस्थापित होना पड़ा। लेकिन इन कठिन परिस्थितियों में भी समाज ने अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं को जीवित रखा। झूलेलाल की आस्था ने ही समाज को जोड़े रखने और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आज भी झूलेलाल जयंती के अवसर पर सिंधी समाज के लोग एक साथ मिलकर समाज सेवा के कार्य करते हैं। यह अवसर केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि समाज की एकता और भाईचारे का उत्सव होता है। इसमें युवा, बुजुर्ग और महिलाएं सभी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। झूलेलाल का संदेश आज की युवा पीढ़ी के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज वाराणसी में सिंधी समाज के लोग तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। समाज द्वारा नए स्कूल, धर्मशाला और मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। अर्दली बाजार में बन रहे स्कूल में बच्चों को सिंधी भाषा में शिक्षा दी जाएगी, जिससे हमारी मातृभाषा सुरक्षित और समृद्ध होगी।

'जिये सिंध, जिये सिंधियत'

श्याम खेमानी,
अध्यक्ष, पूज्य सिंधी सेंट्रल पंचायत (रजि.)

मानवता के गौरव, संस्कृति और विरासत को समेटे हुए सिंधु घाटी की सभ्यता (Indus Valley Civilization) इतिहास के पन्नों में दर्ज केवल एक नाम नहीं, बल्कि यह विश्व की सबसे प्राचीन, सुसंस्कृत और विकसित जीवन शैली की जननी है। हड़प्पा और मोहनजो-दड़ो की गलियों से शुरू हुई यह यात्रा आज भी सिंधी समाज के रूप में जीवित और जागृत है। सिंधु सभ्यता ने दुनिया को नगर नियोजन, व्यापारिक कौशल और स्वच्छता का पाठ तब पढ़ाया था, जब संसार के अधिकांश हिस्से अंधकार में थे। सिंधु नदी के पावन तट पर पनपी यह संस्कृति साहस, धैर्य और अडिग विश्वास की प्रतीक है। सिंधियत केवल एक भाषा या खान-पान नहीं, बल्कि एक संस्कार है। फुटपाथ से फाइव स्टार और शून्य से शिखर तक का सफर तय करने वाला यह समाज आज अपनी मेहनत, बुद्धिमत्ता और परोपकारी स्वभाव के लिए विश्वभर में जाना और सम्मान की नजर से देखा जाता है। विभाजन की विभीषिका और अपनी जड़ों से बिछड़ने के दर्द को झेलने के बावजूद, सिंधी समाज ने कभी हार नहीं मानी। 'सिंधियत' ईष्ट देव 'साईं झूलेलाल' के शांति संदेश और सूफी संतों की उदारता का संगम है। आज भी जब 'आयो लाल, झूलेलाल' का जयघोष होता हैं, तो वह एक अटूट आस्था और अपनी जड़ों के प्रति प्रेम और सम्मान को दर्शाता है।

साथियों... हम गिरकर उठना और अपनी गलतियों से सीखकर आगे बढ़ना अच्छी तरह से जानते हैं। दया, करुणा और क्षमा करना हमारे खून में है। आइए... अपनी महान सिंधु सभ्यता के मूल्यों, धैर्य, उद्यम और भाईचारे को संजोए रखें। अपनी समृद्ध भाषा और संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना ही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि होनी चाहिए। हमें उनके लिए कौन सी सर्वश्रेष्ठ असली पूंजी छोड़ जाना उचित होगा यह निर्णय आप स्वयं करें... **'आयो लाल... सभी चओ झूलेलाल!'**

हासानंद, पूज्य सिंधी पंचाय

विपरीत परिस्थितियों में संघर्षरत रहने वाला है सिंधी समाज

कमलेश छुगानी

आपसी एकता और भाईचारे के प्रतीक के रूप में अवतरित हुए थें वरूण देव झूलेलाल साईं। दसवीं शताब्दी में अपने शासक मिर्ख शाह की अत्याचार और शोषण से त्रस्त जब सिंध का हिंदु समूदाय त्राहि-त्राहि कर रहा था उस समय लगातार 40 दिनों की सामूहिक प्रार्थना के परिणाम स्वरूप भगवान झूलेलाल अवतरित हुए थें। भगवान झूलेलाल जी का वाहन पल्लो (रोहू मछली) सदैव जल के बहाव के विपरीत आगे बढ़ती है, जो प्रतीक है विपरीत परिस्थितियों में संघर्षरत रहने वाले सिंधी समुदाय के फर्श से अर्श तक के सफर का। आज मिर्ख शाह तो नहीं है परंतु सुक्ष्म रूप से अहंकार के रुप में हम सभी के मन मस्तिष्क अनेक मिर्ख शाहों ने जन्म ले लिया है, जिस कारण समाज में बिखराव और वैमनस्यता व्याप्त है। वर्तमान परिवेश में समाज के हर व्यक्ति को चाहिए कि ठहरे और विचार करे की हमारे किस प्रकार के योगदान से समाज का कल्याण हो सकता है। समाज का हर व्यक्ति एक बीज होता है जिसमें विशाल वट वृक्ष की संभावना छुपी रहती है, व्यक्ति अपने वास्तविक विराट स्वरूप को पहचाने और निज से ऊपर उठकर बेहतर समाज के निर्माण में अपना योगदान दे। बिखरे हुए समाज को एकजुट कर पुनर्स्थापित करना, अपने निज संबंधों से ऊपर समाज के हित को रखना हम सभी की प्राथमिकता होनी चाहिए। परिवार और समाज दोनों के कल्याण के लिए अपने अहंकार का त्याग करना ही एकमात्र विकल्प है यह बात जितना जल्दी समझ में आ जाये बेहतर है।

भगवान झूलेलाल साईं के आपसी एकता, भाईचारे और सामूहिक प्रयास के संदेश की प्रेरणा से मिर्ख शाह के आतंक का अंत हो गया तो आज के समय में कोई भी चुनौती इतनी बड़ी नहीं है जिसे पार ना पाया जा सके आवश्यकता है तो सिर्फ अपने ईष्ट देव झूलेलाल साईं जी के बताये मार्ग पर पूर्ण समर्पण के साथ चलने की।

नई पीढ़ी को सिंधी बोली से अवश्य जोड़े

मनोज लखमानी
संरक्षकः सिंधु विकास समिति

किसी भी जाति या सम्प्रदाय की पहचान उसकी सभ्यता, संस्कृति और भाषा से होती है। और आज सिंधियत किसी भी परिचय की मोहताज नहीं है। सिंधियों ने न सिर्फ देश में बल्कि विदेश में भी अपनी लगन और काबिलियत के बलबूते एक अलग पहचान बनायी है। हमारे समाज ने हर क्षेत्र जैसे राजनीति, व्यापार, अध्यात्म, शिक्षा आदि में जीत के झण्डे गाड़े है। हालांकि ऐसा करना बहुत आसान नहीं था क्योंकि हमें विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। लेकिन आज जब हम एक मुकाम हासिल कर चुके हैं तो हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है अपनी सभ्यता को कायम रखना और ये तभी संभव है जब हम सिंधी भाषा की गरिमा को बरकरार रखेंगे आज आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी मातृभाषा सिंधी की अनदेखी करते जा रहे है, जो सही संकेत नहीं है। सिंधियत की पहचान सिंधी भाषा से ही है। लेकिन जिस तरह से यह भाषा हमारी जीवनशैली से लुप्त होती जा रही है वो दिन दूर नहीं जब सिंधी समाज अपनी पहचान खो देगा। अब वक्त आ गया है कि हम सभी जागे और अपनी आने वाली पीढ़ी को सिंधी बोली का उपहार दे। सिंधी पढ़ना, लिखना और बोलना सीखें तभी हमारी सिंधियत की आन, बान और शान बरकरार रह पाएगी। -

युवाओं को सकारात्मक सोच की प्रेरणा देता है भगवान झूलेलाल का संदेश

अमित शेवारामानी

सिंधी समाज के आराध्य देव झूलेलाल का संदेश केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानवता, सद्भाव और एकता का प्रतीक है। आज के समय में जब युवा तेजी से बदलती जीवनशैली और प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहे हैं, तब झूलेलाल का संदेश उन्हें सही दिशा और प्रेरणा देता है। भगवान झूलेलाल ने समाज को प्रेम, भाईचारे और सहिष्णुता का मार्ग दिखाया। उनका संदेश है कि सभी धर्मों और समुदायों के लोग आपसी सम्मान और सहयोग के साथ रहें। यह विचार आज के युवाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि समाज में शांति और सामंजस्य बनाए रखने में युवाओं की बड़ी भूमिका होती है। इसके साथ ही झूलेलाल का जीवन संघर्ष, विश्वास और सकारात्मक सोच की प्रेरणा देता है। युवा यदि उनके आदर्शों को अपनाएं, तो वे न केवल अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि समाज में भी एकता और सद्भाव को मजबूत कर सकते हैं। इस प्रकार भगवान झूलेलाल का संदेश आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो उन्हें अपनी संस्कृति से जोड़ते हुए समाज के प्रति जिम्मेदारी का एहसास भी कराता है।

भगवान झूलेलाल जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

सुपर स्टाकिस्ट

नव भारत एजेन्सीज
नव भारत इंटरप्राइजेज

सी. 4/5 चेतगंज, वाराणसी। मो. 9839397443

पूज्य श्री झूलेलाल जी की जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

रोहनियां, वाराणसी।

भगवान झूलेलाल के मार्ग पर चल कर ही समाज में शांति और संतुलन संभव

आज का समय तेज़ बदलाव, प्रतिस्पर्धा और कई सामाजिक चुनौतियों का दौर है। ऐसे में भगवान झूलेलाल का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो जाता है। उनका जीवन और शिक्षाएं केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं, बल्कि मानवता और सामाजिक संतुलन का मार्ग दिखाती हैं। झूलेलाल का सबसे बड़ा संदेश है सभी धर्मों और समुदायों में समानता और प्रेम। आज जब समाज में मतभेद और दूरी बढ़ रही है, तब उनका यह संदेश लोगों को जोड़ने का काम करता है। वर्तमान समय में असहिष्णुता और तनाव बढ़ते दिखते हैं। झूलेलाल का संदेश सिखाता है कि धैर्य, शांति और सहिष्णुता से ही समाज में संतुलन बना रह सकता है। उनकी शिक्षाएं समाज को एकजुट रखने की प्रेरणा देती हैं।

दिलीप तुलस्यानी
अध्यक्ष
सिंधी समाज, वाराणसी

विशेषकर सिंधी समाज के लिए यह संदेश अपनी पहचान और परंपराओं को बनाए रखने में सहायक है। आज की युवा पीढ़ी के लिए झूलेलाल का संदेश आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और नैतिकता का मार्ग दिखाता है। यह उन्हें जीवन में सही निर्णय लेने की प्रेरणा देता है। वर्तमान दौर में भगवान झूलेलाल का संदेश केवल एक धार्मिक विचार नहीं, बल्कि एक सामाजिक आवश्यकता है। यदि हम उनके बताए मार्ग प्रेम, एकता और सद्भाव को अपनाएं, तो समाज में शांति और संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

भगवान झूलेलाल जी के संदेशः आज के समय में सामाजिक एवं आध्यात्मिक महत्व सबसे ज्यादा

जे. पी बालानी

सिंध के शासक मीरकशाह के अत्याचारों से बचने के लिए एवं हिंदू संस्कृति की रक्षा के लिए सिंधी समाज के लोगों ने एकजुट होकर वरुण देव जी की पूजा की थी, जिससे प्रसन्न होकर भगवान झूलेलाल जी ने अवतार लिया और सबकी रक्षा की एवं यह संदेश दिया कि समाज में सद्भाव, एकता और शांति सदैव बनी रहनी चाहिए। आज के समय में पूरे विश्व को भगवान झूलेलाल जी के इस संदेश का पालन करना चाहिए। हमारा देश तभी प्रगति कर सकता है जब हमारे देश में एकता और शांति बनी रहे। भगवान झूलेलाल जी, वरुण देव जी के अवतार हैं। हिंदू धर्म में वरुण देव जी को जल का देवता माना जाता है। भगवान झूलेलाल जी की सवारी मछली है। मछली हमेशा स्वच्छ जल में विचरण करती है और गंगा मैया की शरण में रहती है। भगवान झूलेलाल जी अपनी सवारी मछली के माध्यम से हमें ये संदेश देते हैं कि जल ही जीवन है, आज के समय में स्वच्छ जल का हम सभी के जीवन में कितना महत्व है, यह हम सब जानते हैं। आज या कोई भी समय में स्वच्छ जल के बिना जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। जिस प्रकार भगवान झूलेलाल जी की सवारी मछली सदैव गंगा मैया की शरण में रहती है, उसी तरह हमें भी हमेशा भगवान की शरण में रहना चाहिए, भगवान का नाम जप करना चाहिए जिससे कि हमें जन्म-मरण के भाव बंधन से मुक्ति मिल सके।यही भगवान झूलेलाल जी के संदेश का आज के समय में आध्यात्मिक महत्व है।

सिंधी समाज का बिखराव रोकने की जरुरत

हासानंद
मुखियाः पूज्य
शिवशक्ति पंचायत

झूलेलाल की आस्था और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बावजूद आज यह सवाल अक्सर उठता है कि सिंधी समाज धीरे-धीरे बिखर क्यों रहा है। यह केवल भावनात्मक मुद्दा नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पीढ़ियों के बदलाव से जुड़ा गंभीर विषय है।

सिंधी समाज की सबसे बड़ी पहचान उसकी भाषा और परंपराएं रही हैं। लेकिन आज की युवा पीढ़ी में सिंधी भाषा का प्रयोग तेजी से कम हो रहा है। घरों में भी हिंदी या अंग्रेज़ी का उपयोग बढ़ गया है, जिससे सांस्कृतिक जुड़ाव कमजोर हो रहा है। पहले सिंधी समाज में संयुक्त परिवार की परंपरा मजबूत थी, जिससे संस्कार और परंपराएं सहज रूप से आगे बढ़ती थीं। अब एकल परिवारों के बढ़ते चलन ने इस कड़ी को कमजोर कर दिया है। आज के दौर में युवा पढ़ाई और रोजगार के लिए देश-विदेश में बस रहे हैं। इससे वे अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं। आधुनिक जीवनशैली के चलते पारंपरिक त्योहारों और सामाजिक आयोजनों में भागीदारी भी कम हो रही है। पहले समाज को जोड़ने में सिंधी पंचायत, संगठन और धार्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका होती थी। आज उनकी सक्रियता कई जगह कम हो गई है, जिससे सामूहिकता कमजोर पड़ रही है।

हालांकि यह स्थिति चिंताजनक है, लेकिन सुधार के रास्ते भी मौजूद हैं–

-घरों में सिंधी भाषा को बढ़ावा देना
-बच्चों को संस्कृति और इतिहास से जोड़ना
-सामुदायिक कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी
-डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से समाज को जोड़ना।

सिंधी समाज का बिखराव कोई अचानक आई समस्या नहीं, बल्कि समय के साथ आए बदलावों का परिणाम है। लेकिन यदि समाज झूलेलाल के संदेश एकता, प्रेम और भाईचारे को अपनाए, तो यह बिखराव फिर से एक मजबूत एकजुटता में बदल सकता है।

झूलेलाल का संदेश वर्तमान समाज में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए आवश्यक

सुरेन्द्र लालवानी
(वरिष्ठ उपाध्यक्ष)
पुज्य सिन्धी सेन्ट्रल पंचायत समाज (रजि)

भगवान झूलेलाल (वरुण देव) का संदेश आज के समय में आपसी भाईचारा, सांप्रदायिक सौहार्द, शांति और पर्यावरण संरक्षण (जल ही जीवन है) के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। वे विविधता में एकता, सहिष्णुता और मानवता को सर्वोपरि रखने का मार्ग दिखाते हैं, जो आधुनिक समय में सामाजिक तनाव और संघर्षों को कम करने के लिए आवश्यक है। झूलेलाल जी ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच भाईचारे और शांति का संदेश दिया, जो वर्तमान समाज में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए आवश्यक है। उन्होंने अत्याचार और जबरन धर्मांतरण के खिलाफ आवाज उठाई, जो अन्यायपूर्ण स्थितियों में साहस दिखाने की प्रेरणा देता है। वरुण अवतार होने के नाते, वे जल को जीवन का आधार मानते हैं, जो आज के समय में पानी के महत्व को रेखांकित करता है। सिंधी समाज के लिए, झूलेलाल जी की शिक्षाएं एकजुटता, भाईचारा, संस्कृति और मूल्यों को बनाए रखने का स्रोत हैं। उनके संदेश मानवता को सर्वोपरि रखने, सच्चे प्रेम और सेवा भाव को अपनाने का मार्गदर्शन करते हैं। भगवान झूलेलाल का संदेश न केवल सिंधी समुदाय के लिए, बल्कि पूरी मानवता के लिए शांति और सद्भावना का प्रकाश पुंज है। मै भारतीय सनातन परंपरा, संस्कृति और नवचेतना के प्रतीक हिंदू नव वर्ष, नव संवत्सर, विक्रम संवत-2083 एवं सांई झूलेलाल जयन्ती के पावन अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

बच्चों की शादियां एक बड़ी समस्या!

भुवन लखमानी

'हमारे सिंधी समाज में बच्चों की बढ़ती उम्र और उनकी शादियाँ एक बड़ी समस्या बन कर सामने आ रही है। पहले जहां हमारे समाज मे जहाँ बड़ों के तय किए हुए रिश्तों को बहुत सुंदर तरीके से निभाया जाता था। लेकिन आजकल बच्चों की उम्र बढ़ती जा रही है और उनकी शादियाँ हमारे समाज के लिए बहुत बड़ी चिंता का विषय हैं। खास कर कैरियर के पीछे आज के युवा शादी को प्राथमिकता नहीं दे रहे हैं। जिससे समाज में बड़ा खतरा पैदा होता जा रहा है। इस विषय में हमारे समाज के कुछ सम्मानित लोगों को ध्यान देना चाहिए। इस झूलेलाल जयंती पर हम भगवान झूलेलाल से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे समाज के बच्चों को अच्छे संस्कार दें और उन्हें सही राह दिखाएँ।

पूज्य झूलेलाल साईं के जन्मोत्सव, नवरात्र एवं नव वर्ष की समस्त सिंधी समाज को ढेर सारी बधाइयां

भवानी शंकर
समाजसेवी

पूज्य साईं झूलेलाल जी का जन्म ही लोगो की सेवा एवं उनके समस्त दुखों का निवारण करने हेतु हुआ था उनको मानने वाले सिर्फ सिंधी कौम ही नहीं अपितु सभी धर्म के लोग थे। भगवान झूलेलाल जी के अवतार के रूप में जन्मे साईं के अनगिनत चमत्कारों के कारण इनको कई नामों से पुकारा जाने लगा जैसे जिन्दपीर, लालसाई,झूलेलाल भगवान, उदेरोलाल, अमरलाल और भी कई नाम थे जो भी भक्त इस दिन भक्ति भाव से सच्चे हृदय से इनकी पूजा अर्चना करता है उसके सब कष्ट दूर हो जाते है। तो आइए हम सब मिलकर इस पर्व को धूमधाम एवं हर्षोल्लास से मनाए और साईं झूलेलाल भगवान जी के संदेशों को जन जन तक पहुंचाए।

जय सिंधियत जय झूलेलाल

शुभकामनाएं

नव वर्ष और भगवान झूलेलाल जयंती के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

नारायण डी.के., गृहशोभा

शुभकामनाएं

भगवान झूलेलाल जी का आशीर्वाद आपके जीवन में खुशियों की लहरें लेकर आए। आपका हर दिन सफलता और खुशहाली से भरा रहे। चेटीचण्ड एवं झूलेलाल जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं!

कुमार सचदेवा, चेयरमैन
झूलेलाल, जयंती समारोह

सेवा परमोधर्म के प्रतीक अमरूमल सुखवानी

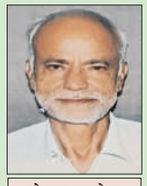

गोपाल सचदेवा
सेवा प्रमुख
श्री पूज्य झूलेलाल मन्दिर लक्सा- वाराणसी।

धर्म सदाचार व सेवा के प्रति विश्वास रखने वाले स्व. अमरूमल सुखवानी ने वाराणसी में सिन्धी समाज को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। सबसे अधिक कार्यकाल तक पूज्य सिन्धी सेन्ट्रल पंचायत की अध्यक्षता करते हुए समाज की सेवा की थी। सहनशीलता व सादगी उनके आभूषण थे। अपने कार्यकाल में उन्होंने वाराणसी की सिन्धी पंचायत का नाम अन्य प्रान्तों में भी रोशन किया वाराणसी में इतर (गैर सिन्धी) भी अमरूमल को सबसे अधिक जानते थे व उनका सम्मान करते थे। वे सिन्धी समाज के आजीवन मुखिया थे। नित्य गंगास्नान कर पूजा- अर्चना करते हुए पहले किसी भी गरीब को भोजन कराते तत्पश्चात् अपने भोजन करते थे। सिन्धी धर्मशाला कमेटी- लक्सा की जमीन पर पंचायत के विशेष आग्रह पर झूलेलाल मन्दिर हेतु थोड़ी जमीन दी जिसमें 1986 में पंचायत द्वारा मन्दिर का निर्माण हुआ। केवल 500/- में अमर नगर का प्लाट सिन्धी समाज को दिया जहाँ आज उन्हीं के नाम पर अमरनगर के नाम से मकान बने है। आज वे करोड़ों की मिल्कियत हो गयी। अमरूमल की कांग्रेस के नेता पं. कमलापति त्रिपाठी व ठाकुर रघुनाथ सिंह के साथ निकटता होने के कारण उनका झुकाव कांग्रेस की ओर था। स्व.अमरूमल के तीन सपुत्र थे। सर्वश्री खेमचन्द कक्कूमल, चेतनदास सुखवानी इस समय तीनो स्वर्गीय है। स्व. चेतन दास का पूरा परिवार लखनऊ में रहने लगा। स्व. खेमचन्द के बड़े लड़के बनारसीलाल अमेरिका में अपने पुत्र के साथ रहते है। स्व. डा. चन्द्र प्रकाश जिनके नाम से प्रति वर्ष बाल मेला उनकी पुत्री श्रीमती पूजा मंगलानी जयपुर निवासी वर्तमान में न्यूजीलैण्ड में है, उनके द्वारा होता है। ई. एस.कुमार, गोपीचन्द्र, अशोक सुखवानी वाराणसी में रहते है, बड़े स्तर पर रोजगार करते। ई.एस. कुमार रेलवे के पार्ट्स के कारखाने आदि उद्यमी है। इस समय वे ही सिन्धी धर्मशाला कमेटी के अध्यक्ष व लक्सा पंचायत के मुखिया है। स्व. कक्कूमल के सपुत्र सर्वश्री ओम प्रकाश व महेश कुमार सुखवानी रेलवे ठेकेदार है। भा.ज.पा. के वरिष्ठ नेता व पूर्व सभासद लीलाराम सचदेवा व वर्तमान पार्षद रामगोपाल वर्मा के प्रयास चल रहा है।

सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

झूलेलाल जयंती के इस अवसर पर सभी को बधाई हो बनारस के सिंधी समाज के लोग झूलेलाल मेले में आयें। जिससे सिंधी संस्कृति कायम रहे। झूलेलाल हमारे इष्ट देवता हैं जिससे हमारी पहचान है। हमें इसे कायम रखना है। आलीवाण पंचायत की ओर से भी सभी को बधाई!

मोतीलाल खट्टर
मुखिया आलीवाण पंचायत

With Best Wishes
Arjun Watch & Mobile Enterprises
Rakesh Kashwani
iPhone | Motorola
Best Deals Available
ONEPLUS SAMSUNG mi
ViVO | Mi
Shop No. 41, Shastri Nagar Market, Sigra, Varanasi | 9918100562

पूज्य झूलेलाल (वरूण देव) जयन्ती पर हार्दिक शुभकामनाएं
दौलत राम ब्रदर्स
हर प्रकार की फैंसी साड़ियों के थोक एवं फुटकर विक्रेता
सहयोगी प्रतिष्ठान- गौरी साड़ी
दशाश्वमेध (डेढ़सी का पुल) वाराणसी।

Bhisham Lakhmani (9415263365) With Best Wishes Jeevan Lakhmani (9415451631)
Funtop, Anik, Haldiram, Orion Chocopie
ॐ SAI TRADERS
SHOP NO. 4, NEHRU MARKET, BEHIND PARADKAR BHAWAN
GOLGHAR, VARANASI - 221001
Associates Distributor : Shree Sai Traders & ShreeOm Sai Traders

भगवान झूलेलाल जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं
Bharat Kr. D.K.
Nitesh Kr. B.K.
साज सज्जा
फर्निशिंग
फैन्सी चादर, पर्दे व सोफा के कपड़े व सोफे की सिलाई सुविधा उपलब्ध है।
रथयात्रा चौराहा, वाराणसी
9415219730, 9305020816, 9336929300
Email : niteshji84vns@gmail.com
www.saajsajjafurnishing.com

माँ कृपा इण्टरप्राइजेज
राजश्री फूड प्रोडक्टस
आशीर्वाद के अभिलाषी
श्री भुवन लखमानी,
श्री सतीश लखमानी
9369470542
7007048922
महमूरगंज, वाराणसी
9369470542
Super Stockist – P.K. Namkeen & Biscuits

सिंधी समाज के लिए प्रेरणा स्रोत महान संत शिरोमणि सांई चाण्डूराम जी

रमेश लालवानी

विगत 15 अक्टूबर 2025 को लखनऊ स्थित शिवशान्ति संत आसूदा राम आश्रम के संस्थापक एवं पीठाधीश्वर सांई चाण्डूराम जी का जैसे ही समाचार मिला समस्त भारत के सिन्धी समाज में शोक की लहर छा गई। सांई जी विगत 2-3 वर्षो से अस्वस्थ होने के बावजूद प्रतिदिन आश्रम में नियमित रूप से सत्संग करते आ रहे थे। सिन्ध स्थित (अब पाकिस्तान) जतोई ग्राम में सन्त आसूदा राम के यहां उन्होंने 8 सितम्बर 1947में जन्म लिया। वाल्यकाल से ही उन्हें अपने माता पिता से धर्म के प्रति शिक्षा प्राप्त होती रही। मात्र 12 वर्ष की अवस्था में ही इन्हें सेवा एवं सत्संग के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई साथ ही इन्होंने गुरू नानक की वाणी का अध्ययन किया, अपने पिता श्री के गुरू सन्त सतराम दास एवं सन्त कंवर राम का अनुसरण करते हुए साधारण जीवन अपनाया। सेवा कार्यो के प्रति इनकी रूचि ने इन्हें सत्संग के साथ-साथ स्वाध्याय की ओर प्रेरित किया।

सिन्ध स्थित पन्नो अकिल में अपने गुरू के आदेश पर इनके पिता श्री सर्व आसूदा राम ने आश्रम की स्थापना की जहां गुरूवाणी का नितनेम होने लगा। आसपास के हिन्दू समुदाय के लोग आने-जाने लगा। सन्त आसूदा राम ने जीवन पर्यन्त गोसेवा को ही अपना अभीष्ठ माना एवं जन कल्याण का कार्य करते रहे। उन्हीं के प्रभाव एवं आर्शिवाद से युवावस्था में चाण्डूराम जी भक्तिभाव में लीन रहने लगे। उनका मानना था कि प्रकृति ने हमको जो असीम शक्तियां प्रदान की है उनके बदले में प्रकृति हमसे केवल समता की अपेक्षा करती है। उनका यह भी मानना था कि संसार में न हमारा कोई मित्र है न शत्रु हमारे गुण अवगुण ही किसी को हमारा मित्र या शत्रु बनाने के लिए उत्तरदायी है। वे सदैव अपने सत्संग में कहते थे कि मानव सेवा ही प्रभु सेवा है। सफलता का इन्तजार मत करो, उठो और राह ढूंढो। उदारता एवं निष्कामता से समाज की सेवा करो। वर्ष 1970 में वे सिन्ध से स्वतंत्र भारत में यात्रा करते हुए उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में आए जहां एक छोटी से भूमि में संत आसूदा राम के नाम से आश्रम की स्थापना की जहां अपने गृहस्थ आश्रम के साथ-साथ गोशाला, तत्पश्चात वृद्धाश्रम, लघु अस्पताल, की स्थापना की गई आगे चलकर सामूहिक जनेऊ, सामूहिक विवाह आदि सामाजिक कार्यो की शुरूआत की गई। प्रतिवर्ष संत आसूदा राम की स्मृति में निर्वाण महोत्सव का तीन दिवसीय कार्यक्रम होने लगा। जिसमें

प्रति वर्ष हजारों की संख्या में देश-विदेश से अनुयायी आते हैं। लखनऊ स्थित आश्रम अब सिन्धी समाज के लिए एक तीर्थ के समान स्थापित किया जा चुका है।

मुझे याद है जब काशी में प्रथम उत्तर प्रदेश सिन्धी सम्मेलन 1981 में आयोजित किया गया तब समाज को दिशा निर्देश देकर संगठित स्वरूप प्रदान करने हेतु उन्होंने आह्वान किया। उस समय मुझे उनका प्रथम दर्शन प्राप्त हुआ। वर्ष 2005 में मुझे उनके वरिष्ठ पुत्र सांई मोहन लाल के साथ सिन्ध की यात्रा करने का भी अवसर मिला। जहां हमने सिन्ध की पवित्र भूमि में स्थापित संतो फकीरो के प्रमुख स्थलों को नजदीक से अनुभव करने का अवसर मिला था। संयोगवश वर्ष 2007 में काशी में नारायण सेवा संस्थान उदयपुर के सहयोग से हमने एक विशाल दिव्यांग शिविर का आयोजन किया तदुपरान्त दिव्यांगों को उपकरण उनके करकमलों से वितरित किया गया। उन्होंने आर्शिवाद देते हुए जीवन पर्यन्त ऐसे सेवा कार्यो को करते रहने की प्रेरणा प्रदान की उनकी विशेष कृपा से अभी तक यह सेवा चल रही है। सांई जी का कहना था कि व्यवस्था, प्रेम व श्रद्धा में हमारी दृढ़ता की परीक्षा लेती है एवं धैर्य की परीक्षा विपत्ति के समय होती है। प्रत्येक सुबह हमारी यह इच्छा होनी चाहिए कि आज का दिन हम दूसरो की भलाई करते हुए गुजारेंगे ऐसे सतगुरू का अनेक अवसरों पर जिज्ञासु बनकर हमने भी उनकी ज्ञान, वैराग्य, भक्ति भावना का अनुभव किया। उनकी सदैव मुझपर कृपा दृष्टि बनी रही। सादगी की मूर्ति सांई जी कहते थे कि हमारे भीतर गुप्त शक्तियां तभी जागृत होती है जब हमारे कार्य आडम्बर रहित हों। मेरी सतगुरू देव महाराज की पवित्र आत्मा के समक्ष प्रार्थना है कि हम आपके गुणों को अपने जीवन में अपना सकें यह निर्मल आर्शिवाद हमें भी प्रदान करें। सांई जी के भौतिक शरीर का तिरोधान 16 अक्टूबर 2025 को लखनऊ स्थित वैकुण्ठ धाम में अन्तिम संस्कार किया गया तत्पश्चात हरिद्वार काशी एवं प्रयाग में हजारों की संख्या में भक्तगणों ने उनकी पवित्र अस्थि को प्रवाहित किया। अन्तिम संस्कार के पूर्व उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वयं आश्रम में जाकर श्रद्धांजलि अर्पित की तत्पश्चात रक्षामंत्री राजनाथ सिंह एवं अनेक राजनेता सन्त महात्मा हजारों की संख्या में पधारे। भारत के गृहमंत्री अमित शाह एवं प्रधानमंत्री ने भी अपनी ओर से शोक संदेश प्रेषित किया। न केवल सिन्धी समाज बल्कि अन्य सभी समाज के धर्मगुरू, समाजसेवी, साहित्यकार, शिक्षाविद उनके पगड़ी रस्म में पधारे। ऐसे महान संत के चरणों को बारम्बार प्रणाम करता हूँ एवं उनके बताए मार्ग पर चलते रहने की शक्ति के लिए प्रभु से याचना है।

पूज्य भगवान झूलेलाल जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

सुविधा साड़ीज इण्डिया प्रा.लि.

सिगरा, Tel : 92767 77777 | गोदौलिया, दशाश्वमेध | एल.बी.एस. एयरपोर्ट, वाराणसी

वाराणसी Email : suvidhasareesindiapvtltd@gmail.com

Real Pl. Mr. Shailu 09820084981

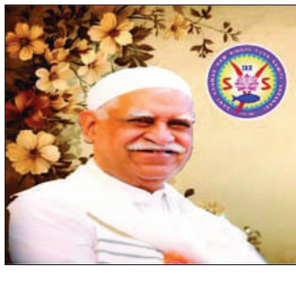

संत कंवर राम सिन्धी युवा समिति (रजि.)

पूज्य भगवान झूलेलाल जयंती पर लख्-लख् बधाई

अध्यक्ष संजय टहलानी | कोषाध्यक्ष हिमांशु कारड़ा | सचिव रतन राजवानी

चलो लेह लद्दाख

Celebrating 30th 1997-2026

Year of Pilgrimage for National Unity

Sindhu Darshan Yatra 2026

प्रथम सिन्धु कुम्भ

Welcomes You to

Leh-Ladakh

22-27 June, 2026

Yatra with a Mission

The 30th Sindhu Darshan Yatra, a symbol of Hindu and Buddhist harmony, will be celebrated as PRATHAM SINDHU KUMBH. Along with 5 days programs of cultural, religious and national integration, you will also get an opportunity to have Sindhu Snan, Behrana Pujan, visit to famous historical places and will also enjoy mesmerizing nature.

यात्रा के साथ साथ मिशन भी

हिन्दू व बौद्ध समन्वय की परिचायक सिन्धु दर्शन यात्रा का 30वां वर्ष प्रथम सिंधु कुम्भ के रूप में मनाया जाएगा। 5 दिन के सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय एकता के कार्यक्रमों के साथ-साथ सिन्धु स्नान, बहराणा साहिब व प्रकृति का अनुपम सौन्दर्य व मन को छू लेने वाले प्राकृतिक दृश्य व कुछ ऐतिहासिक स्थानों को भी देखने का मौका मिलता है।

SD1
DELHI-LEH-DELHI
BY AIR
22-06-2026 TO 27-06-2026
CHARGES : ₹ 22000 + AIR TICKET

SD2
KURUKSHETRA-MANALI-LEH-JAMMU
BY ROAD
18-06-2026 TO 30-06-2026
CHARGES : ₹ 30000

SD3
JAMMU-LEH-MANALI-KURUKSHETRA
BY ROAD
17-06-2026 TO 30-06-2026
CHARGES : ₹ 30000

रूट संबंधी विशेष

जम्मू से जाने वाले यात्रियों के लिए आवास व्यवस्था 17 जून दोपहर 2 बजे से रहेगी, यात्रा 18 जून की सुबह 7 बजे चलेगी। कुरुक्षेत्र से जाने वाले यात्रियों के लिए भी आवास व्यवस्था 18 जून सुबह 10 बजे से रहेगी, यात्रा 18 जून को शाम 5 बजे चलेगी।

SD4
JAMMU-KARGIL-LEH-JAMMU
BY ROAD
17-06-2026 TO 30-06-2026
CHARGES : ₹ 30000

यात्री अपनी सुविधानुसार एक तरफ हवाई व एक तरफ सड़क मार्ग से आना जाना कर सकते है इसके लिए आप हेल्पलाइन पर बात करके शुल्क आदि की जानकारी ले सकते हैं।

Help Line : 9821892711-12
(10.00AM-6.00PM)
email : sindhudarshan8@gmail.com

You Can Download Yatra Registration Forms
Website : www.sindhudarshan.org.in

SINDHU DARSHAN YATRA SAMITI (Regd.)
1681, Main Bazar,Pahar Ganj, New Delhi -110055 Ph. : 011-23562095, 9999254446

सिन्धु दर्शन यात्रा महज एक यात्रा नही है, एक मिशन है : डॉ. इन्द्रेश कुमार

सिन्धु दर्शन यात्रा ने सकंल्प लिया है : तिरंगा फॉर सिंध, तिरंगा फॉर पीओजेके व तिरंगा फॉर कैलाश मानसरोवर यह हमारा था, हमारा है व एक हमारा जरूर होगा

सिन्धु दर्शन यात्रा के माध्यम से पूरा देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व लद्दाख के सामरिक महत्व व सांस्कृतिक महत्व को समझ पाया है। आज पूरा लद्दाख अपने को केन्द्रशासित प्रदेश पाकर प्रफुल्लित है व सिन्धु दर्शन यात्रा की वजह से ही लद्दाख में पर्यटन व आर्थिक विकास प्रारंभ हुआ व उसकी यूटी की मांग को जोरशोर से सिन्धु दर्शन के कार्यक्रमों में उठाया गया जिससे इसकी चर्चा पूरे देश-विदेश में होने लगी

मन्नू जैसवानी
संयोजक सिन्धु दर्शन अभियान समिति

सिंधु दर्शन यात्रा का बीजारोपण तो सन् 1983-84 में ही हो गया था जब रा.स्व.संघ के वरिष्ठ प्रचारक माननीय इन्द्रेश कुमार को भारत का मुकुट कहलाये जाने वाले राज्य जम्मू कश्मीर में प्रचारक का कार्य भार सौंपा गया। जम्मू कश्मीर पहुंचने के कुछ महीनों के उपरान्त सन् 1984 में लेह यात्रा के दौरान सिंधु नदी के दर्शन से वो इतने अधिक मत्रंमुग्ध हुए कि उन्हें प्रतीत होने लगा जैसे मानो उनका जीवन धन्य हो गया हो। इस ऐतिहासिक रोमांचित घटना से वे बैचेन हो उठे। कई प्रश्न सामने आए जैसे कि क्यों हम भारतीय अपने मूल को भूले चुके थे ? क्यों यह प्रदेश इतने लम्बे समय से अलग-थलग पड़ा था ?हम कैसे अपने मूल की उपेक्षा कर सकते थे ? कैसी विषमता थी कि एक और तो हम अपनी आने वाली हर पीढ़ी को बड़े गर्व से अपने मूल यानि सिंधु सभ्यता के बारे में ज्ञान दे रहे थे परन्तु वहीं दूसरी ओर कड़वी एवं कठोर सच्चाई यह थी कि यह प्रदेश एवं यहां के निवासी पूर्णत: उपेक्षित थे।

इतिहास से संदर्भ लेते हुए श्री इन्द्रेश कुमार ने महसुस किया कि सभ्यताओं का जन्म सदा नदियों के किनारे पर ही हुआ है और प्राचीन काल में महान विद्वानों ने समाज का गहन अध्ययन करने तथा उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जानकारी एकत्रित करने के लिए व्यापक यात्राएं की थी। इसी के साथ इस विचार ने जन्म लिया कि क्यों न भारत के सभी कोनों से या सभी राज्यों के निवासियों को लेह-लद्दाख लाया जाए ताकि सभी समुदाय एक दूसरे की संस्कृति, भाषा आदि से परिचित हो। उन्होंने जम्मू-कश्मीर की सुदूर एवं व्यापक यात्रा कर वहां की जनता के अलावा उनके सहयोगियों के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से सक्रिय लोगों से भी इस विचार पर संवाद किया।

ईश्वर की कृपा से, श्री लालकृष्ण आडवाणी जी तत्कालीन गृहमंत्री थे व 1996 में चुनाव प्रचार के लिए लेह आए। सिंधु नदी के तट पर पहुंचाने के बाद उन्होंने सर्वप्रथम पवित्र जल से आचमन किया और अत्यन्त अभिभूत हो गये। उन्हीं के शब्दों में, "यह एक दिव्य क्षण था, मुझे लगा जैसे मेरी माँ मुझ पर आर्शीवाद बरसा रही है"। लेह में श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी की यात्रा के उपरान्त श्री इन्द्रेश कुमार और तरूण विजय दिल्ली में श्री आडवाणी जी से मिलने गये और उनके साथ सिंधु दर्शन यात्रा की पूरी अवधारणा पर चर्चा की। श्री आडवाणी जी की एक हां ने इस यात्रा के प्रस्ताव में रंग भर दिए और कार्यकर्ताओं ने उसे उचित आकार देना आरम्भ कर दिया।

पहले इस तीर्थयात्रा का नाम था सिन्धु दर्षन अभियान, फिर नाम पड़ा सिन्धु स्नान पर्व। किन्तु अभी तक के नामकरण से इतना तो स्पष्ट है कि यह तीर्थ और कोई नहीं, वही प्राचीन और पवित्र सिन्धु नदी है जिसके तट पर वैदिक संस्कृति पल्लवित हुई थी, जिस नदी ने हमारे देश को नाम दिया, हमें हमारी सांस्कृतिक पहचान दी। सहस्त्राब्दियों से यह नदी हमारी चेतना में बसी हुई थी, हमारी श्रद्धा का केन्द्र थी। नदी सुक्त में प्रतिदिन हम उसका स्तवन करते आ रहे थे किन्तु 1947 में देश-विभाजन से हम समझ बैठे थे कि हमारी संस्कृति की प्रवाहिका यह पवित्र नदी हमसे छिन कर पाकिस्तान के अधिकार में चली गयी है, उसके पवित्र जल में अब हम स्नान नहीं कर सकेंगे, उसके तट पर बैठकर हम अपनी गौरवमयी इतिहास यात्रा का पुण्य स्मरण नहीं कर सकेंगे, मानो हमसे हमारा नाम छिन गया है, हमने अपनी पहचान खो दी है। 10 अक्टूबर 1997 को दुर्गा नवमी के दिन सिंधु तट पर ऐतिहासिक पहला सिंधु दर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। पहली यात्रा में केवल 65 श्रद्धालु उपस्थित थे तो 1998 में 500 यात्रियों ने इस यात्रा में भाग लिया। बढ़ते-बढ़ते आज यह संख्या हजारों तक पहुंच गयी है व जिसमें लगभग देश के लगभग सभी राज्यों का प्रतिनिधित्व होता है। उसके बाद तो संख्या महत्वपूर्ण नही रह गयी, सिन्धु माँ से मिलने को भाव-विह्वल देशवासी सिन्धु दर्शन का हर वर्ष बेसब्री से इतंजार करने लगे है।।

2008 में सिन्ध दर्शन यात्रा ने नए आयाम जोड़ लिए। सिन्धु दर्शन यात्रा समिति के घटक लद्दाख कल्याण संघ के लोगों द्वारा में लेह में सिन्धु किनारे जमीन खरीदी गई व माननीय मोहनराव भागवत जी व हिमाचल के मुख्यमंत्री श्री प्रेमकुमार धूमल ने स्वय प्रस्तावित सिन्धु भवन का भूमि पूजन किया। 2010 में राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधराराजे ने तो इस भवन की नींव रख दी। और 2012 में 16वीं यात्रा के समय इस भवन का भूतल व पहली मॉजिल बनने को तैयार था। 2016 की यात्रा में भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री व सिंधु पुत्र लालकृष्ण आडवाणी द्वारा इस भवन का लोकार्पण हो चुका है व अब भी इसके संग्रहालय व अन्य कई कार्य बाकी है। लगभग 3 से 5 करोड़ की लागत वाले इस भवन के लिए पूरे देश ने दिल खोलकर दान दिया है व दे भी रहे है। आने वाली 2026 की 30वीं सिन्धु दर्शन यात्रा यात्रा लेह में सिंधु के किनारे प्रथम सिंधु कुम्भ के नाम से भव्य रूप से आयोजित की जाएगी। वस्तुत: इस युग में इस नए कुम्भ को जन्म लेते हुए हम सब देखेंगे जिसमें सिंधु नदी की महिमा व वेदों में सिंधु के महत्व पर सिंधु तट पर स्वामी गोविन्दगिरि जी महाराज तत्रजैसे महान संत महात्मा देश का मार्गदर्शन करते हुए आध्यात्मिक प्रवचन देंगे।

अब इस सब को देखकर यही कहा जाए कि इससे ज्यादा राष्ट्रीय एकता का क्या प्रमाण माना जाए कि लेह जैसे दुर्गम माने जाने वाले इस स्थल पर माँ सिन्धु के दर्शन व स्पर्श पाने के लिए लोग पहुँचे हैं। इसमें सिन्धी भी थे तो मराठी भी। इसमें हिन्दी भाषी भी थे तो दक्षिणभारत भाषी भी। इसमें हिन्दु व बौद्ध थे तो सिक्ख व मुस्लिम भी। अब तो ऐसा लगता है कि जिस तरह श्रद्धालु हरिद्वार या काशी जाकर मां गंगा में स्नान करने के लिए सब कष्ट सहने के लिए आतुर रहते है उसी प्रकार वह दिन दूर नहीं जब लेह में भी श्रद्धालु मां सिन्धु में भी अपनी उसी श्रद्धा के साथ जुटने लगेंगे। श्री देवेन्द्र स्वरूप जी भी अपने शब्दों में कह गए हैं कि धीरे -धीरे यह तीर्थ समस्त देशवासियों को पुन: भारत की सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी सिन्धु नदी से जोड़ देगा।।

Heritage of **Sindh**

श्री झूलेलाल जयन्ती (चेट्री चन्ड्र) महोत्सव 2026

On Friday (Full moon) a child Julelal was born. Knowing this the King Mirkh Shah, sent his Vazir Ahyo, to kill the child. This picture shows Ahyo folding his hands and a snake miraculously appears to save the child.

हार्दिक शुभकामनाएं

ई. एस कुमार
अध्यक्ष
सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया

REGD NO.: S 34749

सौजन्य सेः **Sindhi Council of India**
سنڌي ڪائونسل آف إنڊيا
सिंधी काउंसिल ऑफ इण्डिया

With Best Wishes..

SQC
SUREWIN QUALITY CERTIFICATION
ISO 9001:2000

Khem Chand

Railway Govt. Contractor and Manufacturer of PSC Sleeper for T/out, Main Line, Level Crossing, Switch Expansion Joint, Bridge Approach and other Special Type of Sleepers & Flash Butt Welding of Rails (52/60 KG) using Mobile Flash Butt welding Plant, USFD Testing of Rails Insulated Glued Joint & Reconditioning of CMS Crossings.

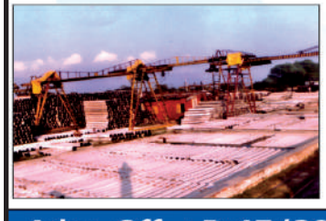

Adm. Off. : D.47/203 A, Girjaghar, Amrumal Katra, Godowalia, Varanasi - 221010
Ph. : 0542- 2400224/225, Fax : 0542-2455176, E-mail : khemchand@satyam.net.in

Happy Cheti chand

VISHAL

BAKER'S

Prop. Vijay Mulani, Shubham Mulani

- Fresh Cream Cakes
- Butter Cookies
- Pastries
- Soup Sticks
- Patties
- Pizza Base

Sigra, Mahmoorganj Road, Varanasi ● Lanka, Varanasi

Ph.: 09369272017 / 9415371544